अध्याय 1

सैद्धांतिक पृष्ठभूमि

1.1 लघु -शोध प्रबंध का परिचय

एक समय था जब भोजपुरी भाषा की फिल्में केवल उत्तर प्रदेश और बिहार के निवासियों का मनोरंजन करती थी। लेकिन बदलते समय के साथ इसमें बदलाव भी आता गया और यह न केवल भारत के अन्य भागों में फैला अपितु धीरे-धीरे विदेशों में भी फैल गया। आज भोजपुरी फिल्मों का वैश्विक फैलाव इसके विस्तृत क्षेत्रफल को दर्शाता है। लेकिन एक तरफ जहां इन फिल्मों ने भोजपुरिया लोगों की भोजपुरी भाषा के प्रति जो झिझक थी उसको तोड़ा तो वहीं दूसरी तरफ इसको अश्लील और फूहड़पन का पर्याय भी मान लिया गया। भोजपुरी फिल्मों का जो सिलसिला 1962 के दौर में "गंगा मईया तोहे पियरी चढ़ाइबो" से शुरू हुआ था 2004 आते-आते उसमें काफी बदलाव हो चुके थे। इसी समय भोजपुरी फिल्म "ससुरा बड़ा पईसा वाला" रिलीज हुई जिसने अपनी लागत से कई गुना ज्यादा कमाई की। इस लाभ को देखकर बहुत से लोग भोजपुरी सिनेमा के निर्माण में कूद पड़े। 2004 के बाद भोजपुरी सिनेमा के निर्माण में ऐसी तेजी आई कि उससे पहले दो बार लुप्तप्राय हो चुके

भोजपुरी सिनेमा को वर्तमान समय में काफी विस्तार मिल चुका है। भोजपुरी सिनेमा जिस रफ्तार से आगे बढ़ रहा है अब कोई नहीं कह सकता कि यह रफ्तार थमेगा।

सिनेमा अपनी सम्पूर्णता में जितना अधिक जनोन्मुखी माध्यम है, शायद उतना कोई अन्य माध्यम नहीं है, कारण यह कि यह जनभावनाओं तक सीधे अपनी पैठ बना लेता है और अभिनयकर्त्ता दूर होकर भी दर्शक के बेहद करीब हो जाता है, बशर्ते उसका अभिनय सहज और प्रभावशाली हो। दर्शक ऐसे पात्रों को अपने बीच पाता है और उसके द्वारा अभिनीत भावनाओं से एकाकार होकर तदनुरूप आचरण करने लगता है। ऐसे अनेक सकारात्मक एवं नकारात्मक उदाहरण मौजूद हैं, जो यह बताते है कि किसी फिल्म विशेष ने एक व्यक्ति के जीवन को बदलकर रख दिया। महात्मा गाँधी के जीवन पर 'सत्य हरिश्चंद्र' फिल्म का जो असर हुआ था, वह उनके सम्पूर्ण जीवन काल में उनके व्यक्तित्व को प्रभावित करता रहा था। उन्होंने इस फिल्म से ही प्रभावित होकर सत्य बोलने का संकल्प लिया था, जिसे उन्होंने आजीवन अपने आचरण में उतारा। 'दो आँखें बारह हाथ' तथा 'जिस देश में गंगा बहती है' फिल्में देखकर कई अपराधियों का हृदय परिवर्तन हो गया था और उन्होंने अपराध से तौबा कर ली थी। ऐसे ही कई फिल्मों के नकारात्मक प्रभाव भी देखने को मिलते हैं कि एक अपराधी ने अमुक फिल्म में दर्शाये गए अपराध से प्रेरित होकर अपराध किया।

अतः हम कह सकते है कि किसी भी समाज में सिनेमा, खासकर 'क्षेत्रीय सिनेमा' उस समाज और क्षेत्र का एक आईना होता है। क्षेत्र विशेष की झलक उसके क्षेत्रीय सिनेमा में बहुत सशक्त रूप में सामने आती है ।[1] हिन्दी सिनेमा में कमोवेश पूरे भारत की कुछ मिथकीय तो कुछ वास्तविक संस्कृति को दिखाने की कोशिश की जाती रही है। हिन्दी फिल्म की जीवन यात्रा के दौरान अनेक प्रभाव देखने को मिले। इनमें प्राचीन संस्कृत नाटकों, महाकाव्यों, महाभारत, रामायण, पारंपरिक लोक थियेटर, उत्तर प्रदेश प्रदेश की रामलीला, तमिलनाडू की तिराकट्टू, बंगाल की यात्रा, पश्चिमी म्यूज़िकल टेलीविज़न, हॉलीवुड तथा पारसी थियेटर मिश्रित यथार्थवाद और कल्पना, संगीत और नृत्य, कथा और तमाशा आदि की स्पष्ट छाप देखने को मिलती है। भारत में जब फिल्में बननी शुरू हुई तो सबसे पहले धार्मिक टेक्स्ट पर

[1] उदाहरण के लिए 'गंगा मईया तोहे पियरी चढ़इबो', 'बिदेशिया' आदि फिल्में

आधारित फिल्म बनी ।[2] किन्तु समय के साथ इसमें कई बदलाव आते गए। बदलते समय के साथ इसमें 'हिंसा' और 'यौनिक खुलापन' भी बढ़ता गया ।

'क्षेत्रीय सिनेमा' में फिल्मों का बनना एक रोचक पहलू रहा खासकर भोजपुरी सिनेमा बनाने के पीछे यह सोच रही कि भोजपुरी अंचल में व्याप्त बुराइयों और अवगुणों को सिनेमा के माध्यम से लोगों के सामने लाया जाए। शुरू में जो फिल्में बनी उनमें उन मुद्दों को ज़ोरशोर से उठाया भी गया। उन मुद्दों में "तत्कालीन दहेज़ की समस्या, जाति की समस्या, बेमेल विवाह, नशाबाजी, सामंती संस्कार और अंधविश्वास से निकली समस्या" आदि शामिल थे। किन्तु धीरे-धीरे भोजपुरी सिनेमा को इन मुद्दों से हटाकर अश्लीलता की ओर मोड़ दिया गया जिसमें स्त्रियों की एक नकारात्मक छवि भी गढ़ी गई। वर्तमान समय में भोजपुरी फिल्में बहुत बड़ी जनसंख्या में लोकप्रिय हैं, ये पश्चिम बिहार, पूर्वी उत्तर प्रदेश, तराई का इलाका और दक्षिण नेपाल तक फैली हुई है। न सिर्फ पूरे भारत में बल्कि दुनियां के कई देशों में भी भोजपुरी फिल्में देखी जा रही है। मारीशस, नीदरलैंड, ब्राज़ील, फ़िजी, गुआयना, दक्षिण अफ्रीका, दक्षिण अमेरिका, सूरीनाम, त्रिनिनाद, सिडनी तथा टोबैको सहित लगभग 25 से भी ज्यादा देश हैं जहां भोजपुरी भाषी लोग बसे हैं। इनमें ज्यादातर भोजपुरी भाषा बतौर मातृभाषा बोली जाती है। आज देश और विदेश में लगभग 18 करोड़ लोग भोजपुरी बोलते हैं ।[3]
एक समय था जब भोजपुरी भाषी क्षेत्र के लोगों को हेय दृष्टि से देखा जाता था। भोजपुरी भाषी को कहीं अन्यन्त्र जाने पर अगर वहाँ उन्हें कोई दूसरा भोजपुरी भाषा-भाषी व्यक्ति मिलता था तो वो उस सहजता से उनसे भोजपुरी में बातचीत नहीं कर पाता था जिस सहजता से कोई बंगाली अन्य बंगाली से अथवा कोई पंजाबी व्यक्ति अन्य पंजाबीसे अपनी भाषा में बातचीत करता था। वह ज़्यादातर हिन्दी में ही उनसे बातचीत करता था। कारण स्पष्ट है कि वे भोजपुरी में बातचीत करने में अपने को असहज महसूस करते थे क्योंकि भोजपुरी भाषा को और भोजपुरी भाषियों को भारत के अन्य भाषा-भाषी क्षेत्रों के लोग गंवार, अनपढ़ और अपने से हीन समझते थे। कमोवेश आज भी बहुत से लोगों में यह भावना बनी हुई है। किन्तु कालांतर में अधिकांश लोगों की हिचक टूटने लगी फलस्वरूप वर्तमान समय में बहुत बड़ी संख्या ऐसे लोगों की है जो अब अन्य भाषा-भाषियों के सामने भी भोजपुरी बोलने में हिचकते नहीं है। इस हिचक को तोड़ने में 'डाइस्पोरा' और 'भोजपुरी फिल्मों' का बहुत योगदान रहा।

[2] पहली भारतीय फिल्म 'सत्य हरिश्चंद्र'

[3] http://164.100.47.132/LssNew/psearch/Result15.aspx?dbsl=3140

भारत से औपनिवेशिक काल में भोजपुरी क्षेत्रों से बहुत बड़ी संख्या में स्त्री और पुरुष गिरमिटिया के रूप में विस्थापित हुए। इनको एग्रीमेंट के तहत दक्षिण अफ्रीका, त्रिनिदाद, मॉरीशस, फ़िजी, गुयाना आदि जगहों पर काम करने के लिए ले जाया गया। इन लोगों को डायस्पोरा (विस्थापित) कहा जाता है। कालांतर में अनेक कष्टों को सहने के बावजूद वे विस्थापित लोग आर्थिक रूप से सुदृढ़ होते गए और उन गंतव्य देशों में ऊंचा मुकाम हासिल करते गए। उन गंतव्य देशों में जहां वे मजदूर गए वहाँ की भाषा और संस्कृति अलग थी। किन्तु उसके बावजूद भी अपनी भाषा और संस्कृति को ये विस्थापित मजदूर बचाए रखने में कामयाब रहे। हालांकि इसमें कुछ बदलाव भी हुए लेकिन इन प्रवासियों ने काफी हद तक अपनी भाषा और संस्कृति को बचाए रखा। वर्तमान समय में भोजपुरी ही हिन्दी के अलावा भारत की ऐसी भाषा है जो अंतरराष्ट्रीय स्तर पर बोली जाती है। आज विश्व के कई देशों में भोजपुरी बोली और समझी जाती है जिसका श्रेय भोजपुरी क्षेत्रों से विस्थापित लोगों को जाता है। जिसके कारण भोजपुरी प्रदेश के लोगों में भोजपुरी को लेकर गर्व का अनुभव हुआ।

इसी प्रकार भोजपुरी सिनेमा ने भी भोजपुरीको प्रचारित करने का कार्य किया और लोगों की भोजपुरी के प्रति हिचक को भी तोड़ा। किन्तु इन सबके बावजूद भोजपुरी सिनेमा के बदलते स्वरूप ने कई सारे सवालों को भी जन्म दिया है। जिनका जबाब खोजना पड़ेगा।

इन प्रश्नों में कुछ प्रश्न निम्नलिखित हैं -

1- भोजपुरी सिनेमा में दर्शायी गई स्त्रियाँ समाज के किस जाति, वर्ग और धर्म का प्रतिनिधित्व करती दिख रही है ? क्या समाज के सभी तबकों की भागीदारी इसमें सुनिश्चित है?
2- क्या इन फिल्मों के माध्यम से लोगों को महिलाओं के प्रति संवेदनशील बनाया जा रहा है या लोग इन फिल्मों को देखकर महिलाओं के प्रति असंवेदनशील हो रहे हैं ?
3- इन फिल्मों के माध्यम से महिलाओं की किस प्रकार की छवि का निर्माण किया जा रहा है ?
4- भोजपुरी बोली एक क्षेत्र-विशेष का प्रतिनिधित्व करती है। क्योंकि हर क्षेत्र की अपनी कमजोरियाँ और विशेषताएँ होती है तो भोजपुरी सिनेमा क्या अपने क्षेत्र की उन

कमजोरियों और विशेषताओं को प्रस्तुत कर रहा है ? खासकर क्या वो स्त्री मुद्दों को दिखा रहा है ?

5- भोजपुरी सिनेमा में महिलाओं की भागीदारी भी बड़ी संख्या में है जिनका इन फिल्मों में चित्रण किया जाता है तो भोजपुरी सिनेमा में महिलाओं के चित्रण का मनोविज्ञान क्या है ?

6- आज क्या कारण है कि 'श्वेता तिवारी' भोजपुरी फिल्मों में काम नहीं करना चाहती है । आखिर क्यों उनका कहना है कि भोजपुरी फिल्में महिलाओं का इस्तेमाल करती है ।[4]

7- श्वेता तिवारी का एक और बयान है जिसमें उन्होनें कहा है कि भारतीय दर्शकों को गोरी चमड़ी हिरोइने ही पसंद आती है ।[5] तो क्या फिल्मों में वर्ण-भेद भी मौजूद है ?

8- आखिर वो क्या कारण है कि भोजपुरी फिल्मों से नाम कमाने वाले अभिनेता 'रवि किशन' आज भोजपुरी फिल्मों में काम नहीं करना चाहते है ?

जाहिर है कुछ कमियाँ भोजपुरी सिनेमा में और उसे बनाने वालों में जरूर है। जरूरत इस बात की है कि उन कमियों को चिन्हित किया जाए ताकि उन्हें सुधारा जा सके।

हम जानते है कि किसी भी सिनेमा के निर्माण का सबसे मुख्य उद्देश्य व्यावसायिक होता है और लाभ कमाना होता है। लेकिन इन फिल्मों में जो भी काल्पनिकता अथवा यथार्थता या दोनों का सम्मिश्रण प्रस्तुत किया जाता है वह कहीं न कहीं मानव या मानव के जीवन से जुड़ा होता है। इसलिए फिल्मों की मानव या मानव समाज के प्रति तो एक जिम्मेदारी बनती ही है जिसको झुठलाया नहीं जा सकता है। साथ ही सिनेमा समाज पर व्यापक प्रभाव डालता है यह सत्य भी अकाट्य है। चूंकि क्षेत्रीय सिनेमा अपने क्षेत्र विशेष का प्रतिनिधित्व भी करता है इसलिए क्षेत्रीय सिनेमा में समाज को जिस प्रकार प्रस्तुत किया जाता है ज्यादातर लोग उस समाज को वास्तविक रूप में भी वैसा ही समझने लगते है। इस दृष्टि से भोजपुरी सिनेमा में जो कुछ भी दिखाया जा रहा है लोग उसे ही भोजपुरी अंचल की वास्तविकता समझने लगते है।

---

[4] Live.हिंदुस्तान .com पर छपा इंटरव्यू)

[5] http://hindi.filmibeat.com/news/shweta-tiwari-says-indians-wants-sunny-to-katrina-blonde-actresses-047453.html

आज भोजपुरी फिल्मों में यौनिकता के साथ फूहड़ता को परोसने की होड़ मची हुयी है। जो जितना अधिक 'यौनिकता' को परोस रहा है वह अपने को उतना ही अधिक सफल मान रहा है। एक समय था जब भोजपुरी में मिठास और इसकी टोन में एक अलग ही अपनत्व था जो कि लोकगीतों की विशाल परंपरा के द्वारा संभव हुआ था। भोजपुरी में जन्म से लेकर मृत्यु तक के लोकगीत गाये और सुने जाते थे जिनमें महिलाओं का बहुत बड़ा योगदान था। इन लोकगीतों को महिलाएं खेतो में काम करते हुए, बाजार जाते हुए, घरों में काम करते हुए गाती रहती थी। शादी-विवाह और रीति-रिवाजों तथा धार्मिक अवसरों पर महिलाएं तो गाती ही थी यहाँ तक कि जब किसी की मृत्यु हो जाती थी तो उनके रोने में भी गीत और लय समाहित था और आज भी ग्रामीण भोजपुरी क्षेत्र की महिलाओं में यह विधा देखी जा सकती है। लोकगीतों की यही विधाएं आगे चलकर भोजपुरीगीतों की धुरी बनी। किन्तु कालांतर में जब भोजपुरी को स्टेज प्रोग्राम और रिकार्डिंग के लिए गाना शुरू किया गया तो उसमें द्विअर्थी शब्दों की रचना शुरू कर दी गई। वर्तमान समय में भोजपुरी में ऐसे-ऐसे गाने गाए जा रहे है कि वे द्विअर्थी न होकर एक ही अर्थ को प्रदर्शित करते है और वो एक अर्थ पूरी तरह 'यौनिकता के भौड़ेपन' को समर्पित है। इन्हीं द्विअर्थी और एकअर्थी गानों को भोजपुरी सिनेमा के माध्यम से दिखलाया जा रहा है और उसकी पिक्चराइजेशन भी उसी के आधार पर की जा रही है। इस अश्लीलता का माध्यम महिलाओं को बनाया जा रहा है।

अतः जरूरत इस बात की है कि भोजपुरी सिनेमा के इस बदलते आयाम में महिलाएं कहाँ और किस स्थिति में है इसका गहराई से अध्ययन किया जाए।

प्रस्तुत विषय को लघू-शोध प्रबंध के रूप में चुनने का कारण-

सिनेमा अभिव्यक्ति का एक सशक्त माध्यम होता है। सिनेमा दृश्य, श्रव्य के माध्यम से लोगों में अपनी गहरी पैठ बनाता है। शायद ही कोई ऐसा व्यक्ति होगा जिसने कोई फिल्म न देखी हो अथवा न देखना चाहता हो। लोगों में हॉलीवुड और वालीवुड फिल्मों का क्रेज तो होता ही है किन्तु साथ ही अपनी क्षेत्रीय भाषा की फिल्मों के प्रति भी खूब लगाव होता है।

एक भोजपुरी भाषी क्षेत्र (गोरखपुर) का निवासी होने के कारण भोजपुरी के प्रति मेरा लगाव स्वाभाविक है। आज लगभग 20 करोड़ लोग भोजपुरी बोलते है। किन्तु कुछ लोगों ने इसे द्विअर्थी और फूहड़ बोली के रूप में प्रसारित कर दिया है। जिससे लोग इसे हेय दृष्टि से देखते है। भोजपुरी में ऐसे सैकड़ों एल्बम के गाने मिल जाएंगे जो स्त्री विरोधी मानसिकता से

ग्रसित है। जैसे- ए डब्बल चोटी वाली तोहे टांग ले जाइब हो, हमरा हऊ चाही, मिस कॉल मारताडू किस देबू का हो, बिलेड मार के जींस पैंट फार दी कवनों आदि गाने। वर्तमान में जो भोजपुरी फिल्में बन रही है उनमें बहुत सारे गाने भोजपुरी एल्बम से ही लिए जाते है जो कि बहुत ही भद्दे होते है। ऐसे गानों को लेने के कारण उन फिल्मों की पिक्चेराइजेशन भी उसी के आधार पर की जाती है। वर्तमान भोजपुरी फिल्में देखकर लगता है कि उन्हें सिर्फ एक शरीर ही समझ लिया गया है। पितृसत्तात्मक मानसिकता के द्वारा लगता है जैसे स्त्रियों का 'वस्तुकरण' किया जा रहा है।

अतः इस विषय को चुनने का मुख्य कारण यह रहा कि भोजपुरी फिल्मों में स्त्रियों की जो छवि प्रस्तुत की जा रही है उसका समाज पर क्या असर पड़ रहा है इसका अध्ययन करना। क्या लोग सचमुच ऐसे गाने सुनना तथा ऐसे फिल्मों को देखना पसंद करते है जो अश्लील कही जाती है अथवा महिलाओं की इस छवि को प्रस्तुत करने के पीछे कोई पितृसत्तात्मक मानसिकता छुपी है। खासकर भोजपुरी एल्बम के गानों और सन् 2000 के बाद बनी फिल्मों का क्या योगदान है इसको समझना।

1.2 लघु -शोध प्रबंध का उद्देश्य एवं प्रश्न

शोध का उद्देश्य-

1- भोजपुरी फिल्मों में जाति, वर्ग और धर्म की राजनीति क्या है और वे किस प्रकार का प्रतिनिधित्व कर रही है इसका अध्ययन करना।

2- भोजपुरी बोली एक क्षेत्र-विशेष का प्रतिनिधित्व करती है। यह सिर्फ भौगोलिक न होकर एक संस्कृति इकाई भी है। क्योंकि हर क्षेत्र की अपनी कमजोरियाँ और विशेषताएँ होती है और वहाँ की संस्कृति के माध्यम से वह प्रकट भी होती है। क्षेत्रीय फिल्मों का आधार ही वहाँ की संस्कृति और सभ्यता होती है। अतः क्या भोजपुरी सिनेमा अपने क्षेत्र की उन कमजोरियों और विशेषताओं को प्रस्तुत कर रहा है? खासकर क्या वो स्त्री मुद्दों को दिखा रहा है इसका अध्ययन करना और वे मुद्दे कौन से है इसकी पड़ताल करना।

3- भोजपुरी फिल्मों में जेंडर की क्या भूमिका है इसका अध्ययन करना।

शोध के प्रश्न –

1- भोजपुरी सिनेमा में दर्शायी गई स्त्रियाँ समाज के किस जाति, वर्ग और धर्म का प्रतिनिधित्व करती दिख रही है। क्या समाज के सभी तबकों की भागीदारी इसमें सुनिश्चित है?

2- भोजपुरी सिनेमा में महिलाओं के चित्रण का मनोविज्ञान क्या है?

3- भोजपुरी सिनेमा का राजनैतिक अर्थशास्त्र क्या है?

शोध क्षेत्र

शोध क्षेत्र के रूप में क्षेत्र-कार्य (field work) और पुस्तकालय (library) दोनों को चुना गया है। क्षेत्र-कार्य के अंतर्गत उन लोगों का साक्षात्कार लिया गया है जो किसी न किसी रूप में भोजपुरी फिल्मों से जुड़े है अथवा उसके बारे में जानकारी रखते है।

सिद्धांत

नारीवाद की द्वितीय लहर में अहम भूमिका अदा करने वाली 'सिमान द बुआ' का कहना था कि सेक्स को जेंडर से अलग समझना चाहिए और महिलाओं का उत्पीड़न जेंडर के कारण है दूसरे शब्दों में कहा जा सकता है कि 'औरत पैदा नहीं होती बनाई जाती है'।[6] जाहिर है यह 'बनाए जाने' की प्रक्रिया 'प्राकृतिक' न होकर 'सामाजिक निर्मिति' है। जिसको जेंडर के रूप में चिन्हित किया गया है। जो कि एक पितृसत्तात्मक सोच है। भोजपुरी फिल्मों का निर्माण भी कमोवेश पितृसत्तात्मक सोच के द्वारा किया जाता है। इसी कारण स्त्रियों को एक वस्तु के रूप में प्रस्तुत किया जाता है। जिसका उदाहरण है 'आइटम सॉग'। कोई पुरुष अगर फिल्मों में किसी भी प्रकार का नाच-गाना करेगा तो उसे आइटम सॉग की संज्ञा नहीं दी जाएगी। लेकिन फिल्म में आइटम सॉग रखा जाता है और उसे किसी स्त्री द्वारा कराया जाता है। आइटम सॉग की शर्त होती है कि उसमें लटके-झटके और 'यौनिक खुलापन' होनी चाहिए। अब 'आइटम' शब्द पर ध्यान दे तो यह साफ समझ में आ जाता है कि इसका मतलब वस्तु होता है। स्त्रियों के लिए आइटम, पटाखा, फुलझड़ी जैसे शब्दों का इस्तेमाल पुरुषों द्वारा किया जाता है जो जेंडर आधारित सोच को परिलक्षित करती है।

[6] नारीवादी राजनीति : संघर्ष एवं मुद्दे, पृ. सं. 40

1.3 लघु -शोध प्रबंध की प्रवृत्ति, प्रविधि एवं सीमाएं

शोध प्रविधि-

प्रस्तुत लघु-शोध प्रबंध में नारीवादी शोध प्रविधि का सहारा लिया गया है। नारीवादी शोध प्रविधि में बहुत सारे मैथड होते है किंतु नारीवादी शोध प्रविधि के अंतर्गत इस परियोजना में गुणात्मक शोध का सहारा लिया गया है। क्योंकि गुणात्मक शोध के माध्यम से हम सम्पूर्ण रूप से हर पहलु को ध्यान में रखते हुए विस्तारपूर्वक अपने शोध को पूर्ण कर सकते है। शोध में संख्यात्मक शोध को भी शामिल किया गया है। संख्यात्मक शोध के तहत 'द संडे इंडियन तथा इंडियन काउंसिल ऑफ मार्केट रिसर्च' के दो सर्वेक्षणों को रखा गया है। जिसके अंतर्गत चरणबद्ध रूप से इस शोध को पूरा किया जाएगा वह इस प्रकार है,

1- शोध से संबन्धित पुस्तकों, पत्रिकाओं, लेखों, फ़िल्मों, डाक्यूमेंट्री, ब्लाग आदि का अध्ययन किया गया है।
2- 5 चुने हुए भोजपुरी फ़िल्मों का अवलोकन किया गया है क्योंकि भोजपुरी सिनेमा की तीन लहर चली थी तो उनमें से हर लहर की पहली फिल्म को चुना गया है जो इस प्रकार है - गंगा मैया तोहे पियरी चढ़ाइबो (1962) दंगल (1977) ससुरा बड़ा पैसवाला (2003) इसके अतिरिक्त 8 फ़िल्मों में से लाटरी सिस्टम द्वारा 2 फिल्मों क्रमशः हमार घरवाली (2006), पंचायत (2013) को चुना गया।
3- अपने विश्वविद्यालय (म॰ गा॰ अ॰ हि॰ वि॰ वर्धा) की लाइब्रेरी के साथ ही केंद्रीय पुस्तकालय काशी हिन्दू विश्वविद्यालय वाराणसी, गोरखपुर विश्वविद्यालय तथा पटना विश्वविद्यालय के पुस्तकालय में अपने शोध से संबन्धित अध्ययन सामग्री की खोज की गई और उसका अध्ययन किया गया है।
4- भोजपुरी क्षेत्र, साहित्य और सिनेमा से जुड़े लोगों का साक्षात्कार 'स्नो बॉल मैथेड' से किया गया है।
5- इस प्रकार प्राप्त आंकड़ों का विश्लेषण किया गया है और उसके द्वारा जो भी संभावित निष्कर्ष प्राप्त हुआ उसका प्रतिवेदन किया गया है।

पाठ्य-विभाजन

अध्याय-1. प्रस्तावना

1.1. लघु शोध-प्रबंध का परिचय
1.2. लघु शोध-प्रबंध का उद्देश्य एवं प्रश्न
1.3. लघु शोध-प्रबंध की प्रवृत्ति, प्रविधि एवं सीमाएं
1.4. लघु शोध-प्रबंध की प्रासंगिकता
1.5. साहित्य का पुनरावलोकन

अध्याय-2. भोजपुरी समाज एवं महिलाएं

2.1. भोजपुरी समाज की विशेषताएँ
2.2. भोजपुरी समाज की वर्चस्वशाली अभिव्यक्तियाँ
2.3. मौन एवं मुखर स्त्री

अध्याय -3. भोजपुरी सिने संस्कृति: एक झलक

3.1. इतिहास एवं प्रासंगिकता
3.2. यथार्थ एवं छद्म की रचना
3.3. कार्य प्रणाली (सिनेमा का अर्थशास्त्र)
3.4 भोजपुरी सिनेमा पर बाज़ार का दबाव

अध्याय-4. वर्चस्वशाली पितृसत्तात्मक प्रतिमानों की निर्मिति सिनेमा के जरिये

4.1. चुनी हुई भोजपुरी फिल्मों की समीक्षा
4.2. सिनेमा की स्त्री और समाज का यथार्थ
4.3. भोजपुरी सिनेमा में माँ, पत्नी, खलनायिका एवं अन्य स्त्रियों का चित्रण

अध्याय- 5. विश्लेषण

1) परिशिष्ठ
समाज साहित्य और सिनेमा से जुड़े लोगों का साक्षात्कार
भोजपुरी फिल्मों के पोस्टर

संदर्भ ग्रंथ सूची

शोध की सीमाएं-